ठेला वाला हरिराम

सुबह -सुबह

एकदम सुबह-सुबह

चौराहे पर ठेला लगाता है

मुहल्ले का हरि राम

पहले इनके पिता

करते थे यह काम।

उनके हाथों के बनाए

समोसे की चर्चा

आज भी उस चौराहे पर

नित्य -प्रतिदिन होती है ।

पर वैसा स्वाद नहीं है

जैसा चाचा बनाते थे

ऐसे ग्राहक बोलते हैं ।

Scanned with OKEN Scanner

जब समोसा खाते थे

पुत्र कहता है हाँ

जी हाँ! बाबू जी जैसा

नहीं बना सकता हूँ समोसा

अब मिलावट के समान

आने लगा हैं

समोसा छोड़कर लोग अभी

पिज्जा बर्गर खाने लगे हैं।

आज के बच्चों को बर्गर

मोमोज खूब भाते हैं।

अब समोसा खाने यहाँ

कहाँ कोई आते हैं?

पर जब सरकार युवाओं को

ठेला लगाने कहती है

उनके इरादों के दीवार

Scanned with OKEN Scanner

बेशक ढहती है

ऐसा नहीं कि उसने पढ़ाई

नहीं कि है स्कूलों में।

उस जमाने का

मैट्रिक पास है वह

अब तो बेरोजगारी और बढ़ी है

महंगाई भी दो कदम चढ़ी है

आज उनके बगल में ही

बीए पास किया एक

लड़का चाय बेचता है।

अपनी डिग्रियों को जलाकर

दूध और पानी के जगह

मानो अरमानों को अपनी उबालता है।

चाय के स्थान पर

अपना भविष्य छानता है।

Scanned with OKEN Scanner

संघर्ष करना है जीवन में

इसे अपनी नियति मानता है।

अपने क्षेत्र में प्रतियोगिता देख

अब हरि राम एकदम रहता मौन है

ग्रेजुएट बच्चों को पाल रहा है

बताइये ऐसे में जिम्मेदार कौन है?

नेतपाल यादव

Scanned with OKEN Scanner